

DPN 6521

Title : १. नामकरणा
२. फलान्नप्राशन
३. केशवन्धन-
विधि

1. NĀMAKARANA
2. PHALĀNNA PRĀŚANA
3. KEŚABANDHANA VIDHI

Run. No. 7246

Cat. No.

Micro. No.

Subject Karmakāṇḍa

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. / New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 15.7 x 9.5

Folios 39

Lines (in a page) 7

✓
Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS 1999 / 2036

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu / copy (Milmed)

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

1. अथ नामकरणं ॥ इति नामकरणं ॥ 2. अथ फलान्नप्राशनं ॥ इति फलान्न-
प्राशनं ॥ 3. विवाहचतुर्थीः केशवन्धनविधिः ॥ इति केशवन्धनविधिः ॥

ॐ
नामकर्ण
कलान्तप्रालन
केशवन्धन
वास्मरास्य

नामकर्तृ
फलान्नप्राशन
केशवर्धन-
नरनाथउपाध्याय
आचार्य

२०३
को
सुप्रव ३५८८-नामा
विद्यार्थि
२०३-
२०३

काठमाडौं रूकुँ (१७५५)

Days.	Sun.	Mon.	Tues.	Wed.	Thurs.	Fri.
1 Period	3/15/21					
2 Period	3/15/21					
3 Period	3/15/21					
4 Period	3/15/21					
5 Period	3/15/21					
6 Period	3/15/21					
7 Period	3/15/21					
8 Period	3/15/21					
9 Period	3/15/21					
10 Period	3/15/21					
11 Period	3/15/21					
12 Period	3/15/21					
13 Period	3/15/21					
14 Period	3/15/21					
15 Period	3/15/21					
16 Period	3/15/21					
17 Period	3/15/21					
18 Period	3/15/21					
19 Period	3/15/21					
20 Period	3/15/21					
21 Period	3/15/21					
22 Period	3/15/21					
23 Period	3/15/21					
24 Period	3/15/21					
25 Period	3/15/21					
26 Period	3/15/21					
27 Period	3/15/21					
28 Period	3/15/21					
29 Period	3/15/21					
30 Period	3/15/21					
31 Period	3/15/21					
32 Period	3/15/21					
33 Period	3/15/21					
34 Period	3/15/21					
35 Period	3/15/21					
36 Period	3/15/21					
37 Period	3/15/21					
38 Period	3/15/21					
39 Period	3/15/21					
40 Period	3/15/21					
41 Period	3/15/21					
42 Period	3/15/21					
43 Period	3/15/21					
44 Period	3/15/21					
45 Period	3/15/21					
46 Period	3/15/21					
47 Period	3/15/21					
48 Period	3/15/21					
49 Period	3/15/21					
50 Period	3/15/21					
51 Period	3/15/21					
52 Period	3/15/21					
53 Period	3/15/21					
54 Period	3/15/21					
55 Period	3/15/21					
56 Period	3/15/21					
57 Period	3/15/21					
58 Period	3/15/21					
59 Period	3/15/21					
60 Period	3/15/21					
61 Period	3/15/21					
62 Period	3/15/21					
63 Period	3/15/21					
64 Period	3/15/21					
65 Period	3/15/21					
66 Period	3/15/21					
67 Period	3/15/21					
68 Period	3/15/21					
69 Period	3/15/21					
70 Period	3/15/21					

Pages 32

NAME Mikhael Key Shatma
CLASS 574 A
SUBJECT English

सर सर सर हत दश वदनीरवा चर नगधर फरा वर शयन
जगद्वय मपहर भवभय शयन पर दरलयकर कमल जनयन

नमोः स्रुजलपिण्ये- सरश्चतुर्नमो नमः ॥ द्विमुत्तरे नमो वाह्ये भारत्ये
वाक्ये नमः गोदहिमेदीहवाक्ये नमः ॥ अथापि
न्यशादोद्धमविद्यामि वगीध्याति ॥ २ ॥

समुद्रस्थोत्तरेकूले कुमुदोन्नाम वानर ॥ तस्य स्मरणाच्चराज्वरेयातिदिशो
ध्वमेव निकोत्ता कुशो वनयाना नीज्वरनाश ॥ कूशश्चरयेयो वा ॥
यामले ॥ धूपं दहति पापानि दीपमृत्युर्विशाशनं ॥ अवक्षी नाशयेत्युष्यं अ-
र्घ्यं दुःस्वप्ननाशनं ॥ तिलकं नाशयेत्तश्च नैवेद्यं कलिनाशनं ॥ वलिनां
वल्लिस्तस्यामुद्राया सिद्धिलभ्यते ॥ जापं शोकविनाशयति ध्यानं चैव

महफलम् ॥ विष्णुश्च स्तुतिशब्देन धरावादनमुत्तमम् ॥ द्वादशोत्त
पचारानि देवाचरामिदं फली ॥

श्रीगणेशायनमः॥ ॥ अथनामकरणं ॥ ॥

द्वादशदिवसे सम्पूर्णसामाग्रीतयारणीये स्ना-
नादिनित्यकर्म पुनर्कां थकालीने यनोदकयाये॥

अमुकगोत्रास्मत्त ममपुत्रस्य वा पुत्र्यानामार्चवा
रणचतुष्टयशतनांशे मुखाम्बुदयिक हृदिश्राद्ध
कर्तुं ॥ ॥ सूर्यादिपूजायां थों कलशे पूजाया
ये ॥ ॥ वेदाचन यां थों कलशे हेयाये धामारेषी

न०

ध्यानुवेद कयां थों पागुवोन धूपदीपदक्षि
णा विसर्जनयाये ॥ स्ना ॥ अनलिपुरोहिते
वाथकालीं यजयाये ॥ यथा २ विधि संज्ञे
रा कलशाचरास ॥ सगुरा पूजाधुने ववि
शेषपूजा ॥ दिदिवलिया ॥ ३ जातो धिष्टदेव
ताये इदमासनं नमः पुष्प २ ॥ ध्यान ॥ नीलो
शुकावर्द्धनितम्बविम्बा तालीदलेनार्चितकर्णभु

भूषां॥ माध्वीमदाधूनितनेत्रपद्मां जस्तनीं शंभुव
धूनमामि॥ ध्यानपुष्पं२॥ विद॥ ॐ अकर्म ॥ ॥
जन्मपत्रिका स नोचोया पूजा॥ ॐ जन्मपत्रिकाये
दमासर्तं२ पुष्पं२॥ ध्यान॥ ॐ कृष्णं जिनात्ररासं
मयोगपट्टविभूषितं॥ पद्महस्तधरं देवं जन्मदेवं
नमाम्यहं॥ ध्यानपुष्पं नमः॥ विद॥ ॐ ताऽअस्य॥
प्राकलने गोरचनं श्रीवत्सचोया मये तुष्टुलिचा-

लें इचानं तये॥ ॐ वसोः पवित्रमसि॥ ॥ म-
चा अंगुया॥ ॐ अलंकरण॥ अजसलाया॥
ॐ समिद्धेऽअभ्रन्तदं मर्ति धृतमगेन मधुम
पिन्वमानः॥ चिकैया॥ ॐ ते जासि॥ सितुया
ॐ कारागत्कारागत्रोहन्ति पुरुषः परुषस्य रि
सवानो दुर्वे प्रतनु सहस्य राशतेन च॥ जा
किया॥ ॐ प्रजापते॥ वासया॥ ॐ याऽऔषधी

पूर्वाजातादेवेभ्य स्त्रियुगं पुर ॥ मनैनुवभूणामह
६० शतन्धामानिसप्तच ॥ किंवाताया ॥ दुरु क्रिया ॥ ॐ
दीर्घायुस्त्वा ॥ ओगलहं १२ या ॥ ॐ अश्वत्थेवोनि
षदनम्परैवोवसतिष्कता ॥ गोभाजः इत्तिलारप-
थयत्पनवपूरुषम् ॥ गालेष्टेतयागोरोचनेनां-
चोयातये ॥ गवाया ॥ ॐ नमः पराया ॥ प्यं या ॥ ॐ तेजे
सि ॥ नामया ॥ ॐ इदं विष्णु ॥ इतिविशेषपूजा

अर्तलिगणपत्यादि. मासादिपक्षादितं पूजा ॥
धूपदीप. जपसोमः ॥ ॐ उमान्वितं ॥ कार्याक
रं राखेर्वशां धातृत्वं परमेश्वरी ॥ लक्ष्मीसंतीति
भाग्यदायिनीत्वां नमाम्यहं ॥ श्वेतश्वेताम्बरध
रं श्वेतवृषवाहनं ॥ उमाया सहितं देवं जन्मदेवं न
माम्यहं ॥ फकोत्तोचोने ॥ अवगन्वादि ॥ ॥
ततोर्थपदासर्वन ॥ अग्नियानाम ॥ वार्थिवाग्नि ॥
घृताहुति. तिलाहुति तं योस्विधयके ॥ ॥ यथाः

कर्मस्य बालक मामं बुयेका लक्ष्म्येयकालिनः
कीन ॥ स्वस्तिवाचनं ॥ यत्नया उत्तरे स्वस्तिकास्तेन
तये ॥ ॥ ईकायंकागालि ॥ ॐ रक्षोहर्त्रे ॥ दीपव-
लिसह ॥ ॐ तेजोरिप ॥ जाकिलंकया मचायकेपिया
वलीतये ॥ ॐ अर्धवाच ॥ पिखा लखुस तेकं द्वा-
ये ॥ ॥ मचायानं अर्धपात्रया जलं हों याये ॥ ॐ
स्वस्तिनः इन्द्रो ॥ थकालिनं कलशादिपूजायाये ॥

मण्डलसौत्रांतं ॥ माह्ननं की गतं के ॥ ॥ देवया
तनं मत फंत्वाये थकालिनकीनं ॥ ताचानंत्वा
ये ॥ ॐ असुरघ्न ॥ सुद्धजालं तया सगंधीसह पू
जाभलंत्वाये ॥ ॐ असुरघ्न ॥ पूजाभं अनियोक ॥
सगुराधलि देवतनके ॥ ॐ सम्पूर्णकलशायः
मृत्युञ्जयाय अमृतीश्वरी शक्तिसहिताय अ-
श्वत्थामादि सौगेभ्यः सगुरावरिवारेभ्यो दधिवं
दनाक्षतपुष्पनमः ॥ ३ ॥ ॐ अग्निं तेजोभक्तारका

यदधिचन्दनाक्षतपुष्पं नमः ॥ ॐ सर्वेभ्यः देवेभ्यो
दधिचन्दनाक्षतपुष्पं नमः ॥ ॐ गृहलक्ष्मीभ्यः द
धिचन्दनाक्षतपुष्पं नमः ॥ ॥ थनदेतद्वाया सु
खाये मचायात. हं यो शिर. नाभि. पाद. अनुलो
मविलोमन ॥ ॐ कारडात् ॥ ३ ॥ जाकिं छुके ॥ ॐ दी
र्घायुस्त्वा ॥ ॥ सुगुयागुचिस्वाभागतये ॥ मचा
यातनचन्दनंतिके ॥ ॐ यदयक ॥ सगंधीतिके ॥
ॐ दधिकारणे ॥ वस्त्रविये मचायात ॥ ॐ वसोः प

वित्रम् ॥ श्रीवत्सदुगु नुगले लोकाधिके ॥ मोह
यातनंतिके रपगुनं ॥ केवातालहूनो विये ॥ पूजा
भें अनियाके ॥ ॥ चागलेंथ मचायातनाकने
लफुलीथथे ॥ ॥ खुकूग्वाले ध्यंतया मततया
पूजायाके मास्मन्त मतमदुगु छकूतयासेगुनि
भाले ते के छोये ॥ ॥ ग्वालेतयागुधेलंवाये ॥ ॐ
सु अरंघ ॥ वलिवीलंखचाडये वलिवियेके

लचा डये का तो न के ॥ मचा या त ॥ धन नों क
ने ॥ का ये मचा जूसा जें गुहे पने कने ॥ ह्या
मचा जूसा खव हों पने कने ॥ ॐ नामा वधार
ण लुमुहूर्त मस्तु ॥ ॐ शिवो नामा सि ॥ अन
लि पं या सन के ॥ ॐ धृत प्रासन लुमुहूर्त
मस्तु ॥ ॐ ते जो सि ॥ स्वस्ति वा च न्ने ॥ वो
लित ये ॥ ध्ये वो चां मन तया इचिष्ट क
लं खक्षेये ॥ ॥ शान्तिक पुष्टिक या थों चि

तत्त्व शोधन या ये मचा या तं ॥ अन लि सख्या दु
तिं नि सिया ना ह्यो दक्षिणा ध्यं थों सि च्यु पा
लुनं क्षये ॥ सकल सेतं विये ॥ अनं लि यज्ञ
सिधय के ॥ वी स्वां लगं धी देव तने ॥ अन लि
अभिषेक विये चंदन लगं धी नंतिके मचा या
तं ह्या गुचं दनं तिके मज्जू ॥ ॥ आस्ति वा द वि
ये बाल क या तने ॥ यत्र वा राणा वो ना आशीर्वा

दविये ह्या गुस्वाम ज्यू ॥ जाते लें ह्या ना विये ॥ ॐ
यजवाण ॥ ॐ नाः अस्य ॥ ब्रह्मा मुरारि ॥ ॥
सिफारतियाये ॥ सकसे नतों ह ले ॥ ॐ मनो
जूति ॥ थकार लिनं ज्वला हा के स्यये ॥ ॐ पूर्ण
चें ॥ ॥ खुहु कुहुया पाकलंतया कुले
चा अजिमा देधा वा के शेये दिदि अजि
न ॥ ओ गलें हं १२ द्वार सतये के कामचा
जूसा जे वे ह्यामच जूसा खवेतयके ॥

दुदुकीन वियके ॥ देवादि स्वस्वस्थाने शेये ॥ ॥
थकार लिनं वाक कुया येका सूर्य के ने ॥ ॐ आ-
रुध्ने ॥ ॥ निगेयं कां आलें वां के ॥ ॐ सच्चिदा-
मि ॥ ॥ इति नामकरण ॥ ॥ मचायातें सकसे
नंदक्षिणा शेये ॥ सिचु पाळुनं नयेमा ॥ ॥
जातल हाये भवले वो ने गु श्लोक ॥ ब्रह्मा मुरारि-
स्त्रिपुर एतकारे भानु शशी भूमि सुतश्र्व नीवः
बुधो भृगुर्वेशनि एह केतुः सर्वे ग्रह मंगलमाचरन्तु

यजमयासे कलशपूजाजकयासा यवोदकमयासो-
ज्यु ॥ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ अथ कलाघ्रासर्ग ॥ ॥
कायेमचाज्यूसा जोरगुमहिनीं स्ना मचाज्यूसाविजो
रगुमहिनीं अन्नवाशनयाके ॥ हेतुकुहुमुण्डनेया
ये माकसेया स्नानादि नित्यकर्मधूनकां ह्यापाथ
कालिन यवोदकयाये ॥ समपुत्रस्य वा पुत्र्या फं
लान्नवाशनकर्मणि आभ्युदयिक ॥ ॥ स्त्र्यो
दि पूजायां धां कलशपूजायाये वेदाचैरा यो धां
न कलशेहेपूजायाये . शामारेष्टी . धयागुवे

सीधियागुवेदयवोदक योथों यागुवोने ॥ धूपदा
पदक्षिणा विसर्जनयाये ॥ ॥ अनलि पुरेहिते
वाथकालिं यज्ञयाये ॥ मम पुत्रस्य वा पुत्र्याः फ
लान्नवाशनकर्मणि कु सुखिका यज्ञकर्तुं
यथा यथा विविमन्त्रेण कलशार्चनं ॥ सगुरा
पूजाभुनेत्र विशेष पूजा ॥ ॥ दिदिवलिया ॥
ॐ नातो द्विष्ट देवलोये इदमासनं नमः ॥ पुष्ये २
ॐ अं कर्म ॥ वस्त्रया ॥ ॐ वस्त्राहा ॥ तिसाया ॥

ॐ अलंकरण ॥ पुत्राया ॥ ॐ धान्यमसि ॥ चाया ॥
ॐ माहिर्भूमा ॥ अजेयलाया ॥ ॐ समिद्धोऽं
ॐ ॥ लुया ॥ ॐ हिरण्यगर्भः ॥ स्वानया ॥ ॐ या
फलानि ॥ थुलिभुचासतया पुजायाये ॥ जं
कं कोरवाया ॥ ॐ आरुणे ॥ नेफ्यामू ग्वेयमू
कर्पूर-केरु-आदिफलयागु-सिपतिया ॥
ॐ याः फलानि ॥ जाभोया ॥ ॐ अन्नपते ॥ इति
तिविशेष पुजाया ॥ ॥ अनलि गणपत्या

गणपत्यादि-मासादि-पक्षादितं-पूजायाये-धू
 पदीप-जपस्तोत्रः॥ॐ उमान्वितं॥अत्रगंधादि
 ॥॥तल्लोर्थपदासधिनं॥यथाविधानेन-चरु
 साधनं॥अग्नियानाम॥शूचाग्नि॥॥पंच
 वारुण धूनेव-विशेष-घृताहुति याये॥ॐ
 देवीवाच मनयन्त देवा स्तां विश्वरूपाः पशवोव
 दन्ति॥तानो मन्त्रेण मूर्जन्दुहानो धेनुर्वागस्मा
 तु पसुस्युतेतु स्वाहा॥चरुसत्यागतय॥इदं वाचि
 त्यागः

गः॥ॐ वाजो नोऽअद्य प्रसुवाति दानं वाजो देवाऽऽमृ
 तुभिः कल्पयानि॥वाजो हि सां सर्ववीरं जजानः
 विश्वाऽआसावाज पतियेयं स्वाहा॥इदं वाचे वा
 जायत्यागः॥ॐ प्राणेनान्नमंशीय स्वाहा॥इदं
 प्राणायत्यागः॥ॐ अपानेन गन्धान्नमंशीय स्वा
 हा॥इदं अपानायत्यागः॥ॐ चक्षुषा रूपारयशी
 य स्वाहा॥इदं चक्षुषेत्यागः॥ॐ श्रोत्रेण यज्ञोऽशी
 य स्वाहा॥इदं श्रोत्रायत्यागः॥ॐ प्रजापतये स्वाहा॥

इदं प्रजापतये न्यागः ॥ ॐ अग्नये स्विष्ट कृतये स्वाहा-
इदं मग्नये स्विष्ट कृतये न्यागः ॥ ॥ अनलिघृता-
हुतिः तिलाहुतिः पूर्णान्तं याये कलशादिप्रतिष्ठा
॥ ॥ यथा कर्मसः बालक मामं कुर्ये को यज्ञया
उत्तरे लख्यो हयाः स्वस्मिकासंनेतये ॥ ॥ ईकं
पंक्तौ गाले आलेचनपूतयां मततये ॥ लें जाकिः
पियो वलितयेः स्वस्वेवेदनः पिस्वालखुसतयकं
क्षेये ॥ ॥ अर्घ्यपात्रया जलं हयाये ॥ ॐ स्वस्मि

नऽ इन्द्रो ॥ ॥ मामनं कलशपूजाया के मराड
लसो ज्ञानं ॥ बालकया त मराडलया स्वां दुके ॥
ॐ शोः शान्ति ॥ ॥ मतपं तौ चा सगुण वरश्च
तिस्मा भुनंत्वायेः सगुणधिलिः कलशान्तके ॥ ॐ
सम्पूर्णकलशाय मृत्युञ्जयाय अश्वत्थामादि
सोमेभ्यः दधिचन्दनाक्षत पुष्ये नमः ॥ अग्नि
तेजो भृगुः कारकाय दधिः ॥ गृहलक्ष्मिया तनं ॥
चिस्वा भागतये ॥ चन्दनः सिंदूर सगुणधिलिं

निके स्वस्ववेद्येन ॥ वस्त्रविये मचायात ॥ ॐ वसोः
अनलि थकालिनं • तिसामुजेना • मचायात को
के ॥ कार्धुके व चांतिके ॥ ॐ माहि भूमा ॥ पुत्रो दु
के ॥ ॐ दीर्घा गुस्त्वा ॥ स्फू अनियाके ॥ ॐ पावका
नः ॥ ॥ धाकलनं फिके • मैगुलनं नं फिके • धु
थाय ह माला करवोंके • अथवा आशीर्वादे क X
रवों कुसा जू ॥ ॐ आकृष्णे ॥ ॥ आलयागुसद्

नेवेश पुजा ॥ श्रीसूर्यायनेवेद्यं नमः ॥ कलं
वोष्ट्रवोल्याका मैगुमतदुगु निभाले • नेकं शे
ये ॥ ॥ जाभोसनेक्यामू • ज्वेसू • करपूर केरा
तु • तयागु • सिपति • धाभूया • शोनेतया • य
ज्ञस • धुयातयागु • चरुनंतया • त्वाये ॥ ॐ
असुरघ्न ॥ मचाया ह्योनेतये • थकालिन •
वलिवियों • लें चाउयके • तोनके मचायात ॥
अनंलि • ज्वेसू • नेक्यामू • करपूर • केराता

नामं तयोः पंचगासनकेः सुवेलासः ॥ ॐ फलप्रा
शनसुमुहूर्तमस्तु ॥ ॐ याः फलिनि ॥ पंचगासः ॥
धुलिधुनेन सूके चरुसवालों पंचगासनके ॥ ॥
ॐ अन्नशर्षेन सुमुहूर्तमस्तु ॥ ॐ अन्नपते ॥ स्व
स्तिवाचनं ॥ ॥ केलादकमुन्ना नीरगासस्वको
नके ॥ ॐ हन्तमसि स्वाहा हन्तेति वा हन्तकार-
मनुष्याः इति श्रुते भीरुद्वजामा ॐ रसेन वा-
वामिका मस्य कपिञ्जलमा ॐ सेना शेकाम

स्य कृता मायाऽ आयुष्मा मस्या ध्मा वृक्षवर्च
सकारस्य सर्वे सर्वस्यान्नय ॥ धौ वजितये वी-
लितये धौ भुमे धौ तये ॥ ॥ नुसिके कले
वो चास्य मत तयोः स्यो गुठचिष्ठ कलंकक्षेये
॥ धनपदू हंस वृजायान्ताः बालकया ह्युत्तु
सधीके ॥ अग्निविये मंत्र ॥ ॐ इमां तासः
सिलिक मध्यमासः स हि शूरणा सोदिव्या सोऽ
अन्याः ॥ ह हि साऽ इव श्रेणि शोयतन्ने य दाक्षि

सुदिव्यमज्जमम्बाः ॥ जाकि कू १ विया हंस शो-
ये ॥ ॥ थकालीन लंखधा ~~र~~ याये ॥ अं सुषोक्ष
तमस्तु ॥ ॥ मचायातें त्रितत्वशोधनयाये ॥ अ-
नलिसिफारतिप्रतिष्ठा . अथवा आशीर्वादे
सिफारतियाये ॥ धुधों पाजुं वुयेका पितयने
श्रीसूर्यादि किंगंतकों लितहये ब्रह्म तों हूलां
दुतकाये ॥ ॥ अनलियज्ञसिधेके ॥ फलशा

भिषेकचन्दनसिंदूरसगंधौनं तिके . आ-
शीर्वादविये ॥ सिफारतियाये सकसेन तों
ये हूले ॥ ज्वलाह्वेकं स्वये ॥ पूर्णचन्दु ॥ ॥ को
मारीक्षेये ॥ दिदिवलिनं क्षेये ॥ जंकपितयने
गुधुधों नंज्यू . गण गोग्रासादिस्वस्वस्थाने
क्षेये ॥ मांस्त्रकोमारियाप्रशादमकासंदने
मज्यू ॥ ॥ इति फलान्नवासर्ज ॥ धुगुफला

लान्नप्रशिन आचलेजुयानेथे-चोयागू ॥
मचांमिराकायीगू । जीविका परिक्षा-गुगुव
सूकाल-ब्रहेदेकी हजुई ॥

श्रीर्गणेशायनमः॥ ॥विवाहचतुर्थीकेशवं
धनविधिः॥ ॥थकालीनंयवोदकयाये-
थनदेवागातुवोनेजिलं॥पुरुषनयज्ञयाये॥
हापौब्रह्माष्टकलशनयोथास॥ ॥वक्त्र॥
अद्येत्यादि॥ममविवाहकर्मणिचतुर्थी
कर्मवधूकेशवंधनसिंदूररोहणकुशुशिर
कायज्ञकर्तुंश्रीसू०॥थुकुहूनंजेडब्रह्मास्था
पनयाये॥ब्रह्माष्टकशपूजांयाये॥विशेषपू

जा॥ ॥मूलं ब्रह्मायाथांतये॥ॐ वस्ताः॥कौ
माश्रीसूच॥ॐ रक्षोहरं॥पौका॥ॐ रक्षोहरं
त्वञ्जविष्ट॥दुवीर वंगलह॥ॐ अश्वत्थेवो
कुशवुं॥ॐ पवित्रेस्थो॥थक्ककीच॥ॐ दीर्घा
युस्त्वा॥अंजन॥ॐ समिधोऽअञ्ज॥सिद्धं॥
ॐ त्वञ्जवि॥हिरवापा॥ॐ तववाय॥चुसापा॥
ॐ वाजीवहन्वाजितञ्जानवेदोदेवानावक्षिप्रि
यमासर्वस्थम्॥लुंवी॥ॐ हिरण्यगर्भः॥सप्पा

जाले ॥ ॐ भू भुवः स्व सु पूजाभिः स्या ॐ सुवी
रेवी रे ॥ सुयोषः योषे ॥ महि कुस्या ॥ ॐ पु
जापते ॥ थुलि विशेष पूजा ॥ ॥ अश्वत्थामा
दि गणापत्यादि सर्वं पूजयेत् ॥ धूप दीप ज
प श्च ॥ पद्म योनि ॥ ॥ ततोऽर्थ पदासाभि
नं चरु साधनं जाकि चुरे गूनि स्त्रिया ना स्व
क यो धुनेत्र ॥ तं राटूल मृदालनं ॥ ॐ अन्नपते ॥
भारोऽनिधाय ॥ ॐ सुमित्रियान ॥ इदं कं निधा

य ॥ ॐ पयः पृथिव्या ॥ क्षीरं निधाय ॥ ॐ ते
जोसि ॥ घृतं निधाय ॥ ॐ अया ॐ रसमु
द्वयसदं सूर्ये सतर्हं रसस्थ योरससत्त्वा
गृहास्युत्तमम् ॥ सुकरा निधाय ॥ ॥ चरुपा
त्र पूजा यथा यथा विशेष वेदन पूजा ॥ ॐ पु
जापते ॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानं ॥ ॐ इदं विधु ॥ ॐ
शिवो नामासि ॥ ॐ त्वमग्ने शुभिः ॥ चन्दन
प्रतिष्ठा ॥ ॐ मनोजूति ॥ थुलि विशेष ॥ ॥
अग्नियाना म ॥ शिखिना मारि ॥ वेदाहुति

पंचवारुणानां ॥ विशेषः कृत्याहुति ॥ जेडवुहा
सत्यागः ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा ॥ ॐ कपालाय
स्वाहा ॥ ॥ ॐ अग्ने प्रायश्चित्ते त्वन्देवानां प्राय
श्चित्तिरसिवाह्मरास्त्वानाथकामः उप-
धावामियाः स्ये प्रीतिप्रीतनूस्तमस्ये नाशाय
स्वाहा ॥ इदमग्ने प्रायश्चित्ताय त्यागः ॥ ॐ वायो
प्रायश्चित्ते त्वन्देवानां प्रायश्चित्तिरसिवाह्मरा
स्त्वानाथकाम उपधावामिः स्ये प्रीतिप्रीतनूस्त

मस्ये नाशाय स्वाहा ॥ इदं वायवे प्रायश्चित्ताय त्यागः
ॐ सूर्याय प्रायश्चित्ते त्वन्देवानां प्रायश्चित्तिरसिवा-
ह्मरास्त्वानाथकामः उपधावामिः स्ये प्रीतिप्रीतनूस्त
मस्ये नाशाय स्वाहा ॥ इदं सूर्याय प्रायश्चित्ता
य त्यागः ॥ ॐ चन्द्राय प्रायश्चित्ते त्वन्देवानां प्रायश्चित्ति-
रसिवाह्मरास्त्वानाथकाम उपधावामिः स्ये प्रीतिप्रीतनूस्त
मस्ये नाशाय स्वाहा ॥ इदं च-
न्द्राय प्रायश्चित्ताय त्यागः ॥ ॐ गंधर्वी प्रायश्चित्ते

त्वेन देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथ
 काम उपधा वामिया स्यै यशो धीस्तनूस्तामः
 स्यै नाशाय स्वाहा ॥ इदं गन्धर्वीय प्रायश्चित्ताय
 न्यागः ॥ न्वरुहो मः ॥ ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा ॥
 इदं प्रजापतये न्यागः ॥ ॥ अनलि ब्रह्मादि स
 कलस्तं पृता हुतिविये • घृता हुतिया • क्रम
 तिला हुतियाये ॥ कलशादि प्रतिष्ठा ॥ ॥ यथा
 कर्मस्य पुरुषेण लक्ष्यो धवरवत्स स्वस्ति

कासनेतये ॥ निर्मिद्वनादिस्तोत्रांतं यार्यं • मत
 फत्वायेताचानं त्वाये • सहाजोलनत्वाये ॥ ॐ
 असुरघ्न ॥ धन चुसापानं रुलिचातुया कुतके
 विवाहमधुनिह कुमारचानं फयाकाये • अन
 लि • कोचिकेन वुयके ॥ ॥ द्वेनेचिकतये ॥
 ॐ तेजोसि ॥ फास्वथकू ककीचानं स्वकोरद्वे
 ने ॥ ॐ असुरघ्न ॥ चुसापान सं स्वको धये ॥
 ॐ त्रिणिपदा ॥ वाधूरसि ॥ दधुयागु लिबने

खव
छोये-जत्रयागु स्वग्रहिद्विष्टे ॥ ॐ असुरघ्न ॥ आ
क्षे-द्राफेस्वां धृग्व ॥ थुलि लिबुने छोयागु-सं-स
नया-धूतुला-ह्योने-हया सोचाके ॥ ॐ केशवंध
नसुमुहूर्तमस्तु ॥ स्वस्ति वाचनं ॥ भतुनतू-नसि
हु फाये ॥ ॐ असुरघ्न ॥ ॥ कुलकादेवादि-छोये
थकालि-आदियातं विष्टेः धमनं कृत्वा जेतये ॥
वामावर्तयानां १०८ हिने ॥ ॐ रक्षोहर्त्रे ॥ मांका-
तु ३ हिने ॥ ॐ हिरण्यगर्भः ॥ यिना स्य सिने ॥

ॐ समिधारिं ॥ वडसिसोप्याके ॥ ॐ अयमूर्ता
वटो वृक्षः कृत्ति भव फलीनी भव ॥ ॥ थु था
सगंधी-मूल ^{मिमरलं} पूजा भले तयात्वाये ॥ ॐ असुरघ्न ॥
पूजा भं अनियाके-देत सगंधी तंके-गृहलक्ष्मी
यातं ॥ चंदनं तिके-सगंधलितिके भति-चानीं-मि
मरलं-मूलनं विये ॥ ॐ वसोः पवित्रं ॥ चित्तत्वज्ञा
धनयाये ॥ ॐ भूः स्वाहा ॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानं ॥ ॐ भु
वः स्वाहा ॥ ॐ इदं विष्णु ॥ ॐ स्वः स्वाहा ॥ ॐ नमः

शंभवाय ॥ ओम् हले वी भेंत यों त्वा ना विये ॥
जेड बुझाया जल हाहा याये ॥ ॐ याते पति श्री नान
सनां करेसि ॥ साजीये त्वं मया सह ॥ अमुं देवीति
सुवीक्षणं ॥ अर्घ्योदक न हां याये गायत्री न ॥ ॥
मूलं थोया जलं जव स पाछं के ॥ मिमरं लं धया
जोलं खव स पाछं के ॥ सिद्ध मू पात वस्त्र न चोये
ॐ असुरघ्न ॥ सिद्धं अर्घ्य पात्र या जलं हां याये ॥ ॐ
स्वस्ति न इन्द्रो ॥ सिद्ध देवा दितने पुणे हित थका

लि आदि सिद्धं भागतये ॥ पात वस्त्र मिखा-
सतोक पुयके ॥ पुरुष न धमेति ना ध्वहे ये कां
सिद्ध छाये ॥ ॥ ॐ सिद्धारो हरा सु मुहूर्त मस्तु
ॐ त्वं विष्टदा ॥ सिद्धं सर्व सिद्धार्थं शिरसा
धाय ते त्वया ॥ स्वामिनो दीर्घमायुष्यं पुत्र पोत्रादि
वर्धनं ॥ धधे स्वको सिद्ध छाये ॥ सिद्ध मूलं हा ना
विये ॥ ॐ श्री श्वते ॥ ॥ धन सगुण धर्मा लं तिके
वां लाक स्वान कुं के स्वस्व वेदेन ॥ अजलं डिये के ॥

ॐ वाजीवहन्वा जिनं ज्ञात वेदो देवानां
ॐ समिद्धोऽअञ्जन् रुदरमानीनो दृतमग्निमधु
मत् पिबमानः॥ थक् ककीचा भनुनतू अज
सला हुके ॥ ॐ दीर्घायुस्त्वा ॥ २ चुसापो हुके ॥ ॐ वा
जीवहन्वा जिनं ज्ञात वेदो देवानां वक्षिपियमा
स धस्थम् ॥ ओगलहलं हुके ॥ ॐ अश्वत्थेवो नि
षदनं म्परेवो वसतिष्कृता ॥ गोभाजऽइत्किला
सधयत्सनवध पूरुषम् ॥ कुशबुहुके ॥ पवित्रे

स्थो ॥ हिरवापो हुके ॥ ॐ तव वाय ॥ सप्या जालं स
कर्ता हुके ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सुप्रजाः प्रजाभिः
स्या ॐ सुवीरो वीरेः सुपोष पोषै ॥ ॥ हे कं केने ॥
सिफारति प्रतिष्ठा ॥ ताहूले ॥ ॐ
मनुजुति ॥ ॥ अनलि वधूलस्वया स्वस्तिं कासने
तये ॥ सूर्यादि चरु ॥ यागुते मन्त्रु तायेधो फल
जकतये ॥ वलिवीका चरुप्राशनयाके ॥ चरु

प्राशनमंत्रपुरुष न वेने ॥ ॐ प्राणेस्ते प्राणान्सं द
धामि ॥ ॐ अस्थिभिस्तेऽस्थीनि सं दधामि ॥ ॐ मा एं
सेस्ते मा एं सानि सं दधामि ॥ ॐ त्वचोते त्वचं सं
दधामि ॥ ॥ स्वस्तिवाचनं ॥ क्षीरल्यं केमल्योऽधि
वधौ वज्रितया कलंकक्षेये ॥ हानं वधूथव्रव
सलस्वयातये ॥ अनंलि संख्या हुतिं निसे याना-
हये शान्तिक पुष्टिक तें याये ॥ धनवधूया हृद

स उपमनकुशं धीकं तये ॥ यन्ने सुसीमे हृद
यं दिवि चेदुमसि स्थितम् ॥ वेदाहं तन्मा तद्वि-
विद्या त्यश्येम शरदः शस्त्रं जीवेम शरदः शत
हं शृणायाम शरदः शतम् ॥ ॥ यवधान्या
दियाना ह्या पक्वान्न दुयेथो वधून् सूमधियु
यके ॥ अनंलि वस्त्रा विसर्जनं ह्योऽशकालि
नकीन विस्मसेतं थद्वेहं गु सगुणवियके ॥

सगर्विधूनेव वरयातं महिकसिविये वधूया
तै ह्रुस्या मुस्या विये ॥ ॐ प्रजापतेनत्व ॥ ॥
लदुपुरुषन ह्रुस्या मुस्या वधूनेवीके ॥ देवादि
झायके इष्टदेवतादि भागतयेके स्मृमधिनं थथे
तु भागतये ब्राह्मणादि थकालि सकसेतंवीके
स्त्रीपुरुषया परस्परहिलाकाये स्मृमधिजक
सिद्धदुगु वधूयात विये सिद्धमदुगु वरका

ये ॥ ॥ यज्ञसिधयके ॥ आचों जु^न वधूयावि
सर्जन याके वधूया जल अभिषेक वीत-
काये ॥ वधूयावरयात विये श्रीलक्ष्मीवधूया
नवि ॥ चिंस्वा सगर्वी देवादितने ॥ अनलिअ
भिषेकविये चन्दनाद्याशीर्वाद विये ॥ ॥
थकालि नकीन निष्कसितं सिभारतियाये
तायेहोने ॥ ॐ मनोजूति ॥ ज्वलाह्नेकं स्वके ॥
अष्ट कलशहाये ॥ श्रीवत्स पुरोहित पद्म

जाशी ॥ ध्वज थकालि ॥ कलश थकालिनकीं ॥ चाम
र नो कूतकीं ॥ झण आचाजु ॥ छत्रचि चकार ॥ शे
ख नो ॥ यक्ष यक्षणी द्वार याज वसद्याये ॥ ना
गध्व जलाशयस तें कें द्येये ॥ ॥ आचाजुने वः
ह्मा छत्र थइ मो स्वाये वृक्षायाजल लुनाहये ...
स्त्री पुरुषन भुवास फये ॥ देवादि स्वस्वस्थाने
द्येये ॥ सूमहि लदु हहीनयेमो ॥ ॥ इतिकेशवं

धनविधिः ॥ ॥ गो ३ द्योयातें गो १ जो ना ब्रह्म
यातें गो १ सहिलुयात क सील्यं के मा फं सा
सिहं दु पिं ब्राह्मणीतयेत सूमहिदानयाये ॥
व्रतवंधने व विवाहे व द्यगु पूजा यो मो ध्वखः
प्राचीनसफुलीदु ॥ ॥ संवत् १९९९ रुद्रादिआ
षाढ रुद्रे चोयात गुलिहं याकया से २० ३६ सा
ल भाद्रपद सापादु पशिवा बुध वीवार संपूर्णम्
विद्वज्जने परिशोभिनीयम् ॥

Prevention - रुकावट / facilitation =

20

15

10

5

0

cmts.

5

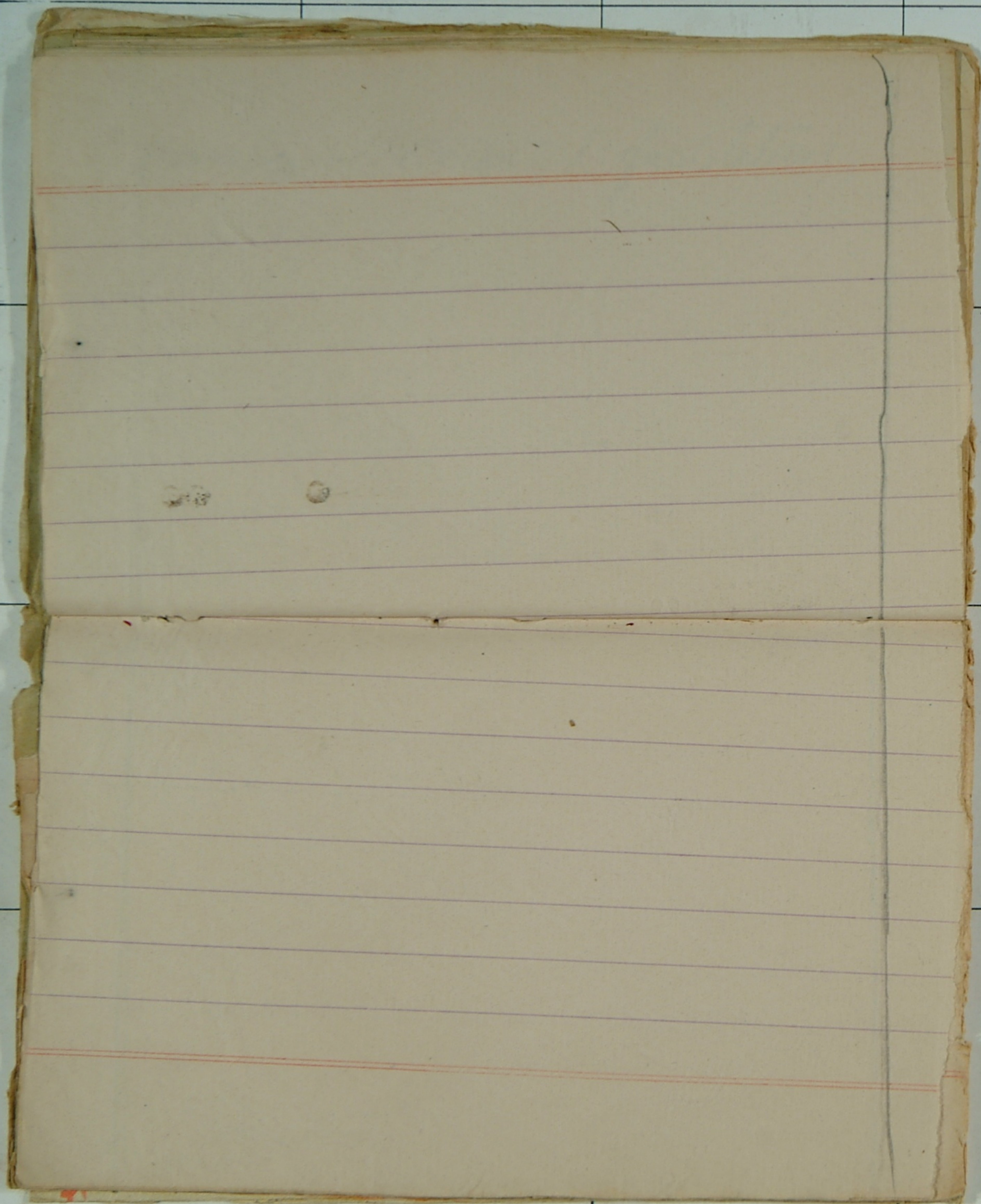
10

15

20

25

30



20

15

10

5

0

cmts.

5

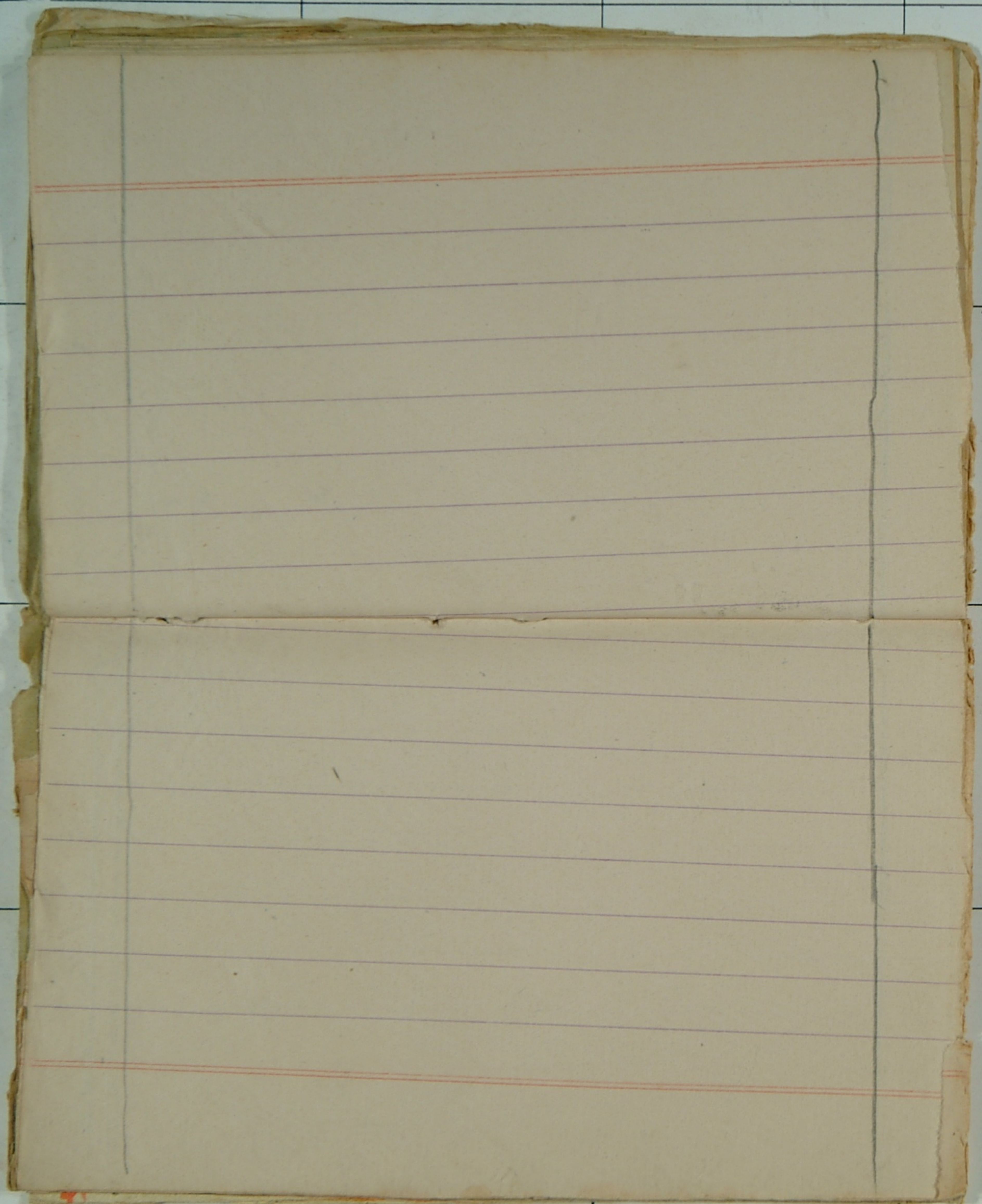
10

15

20

25

30



20

15

10

5

0

cmts.

5

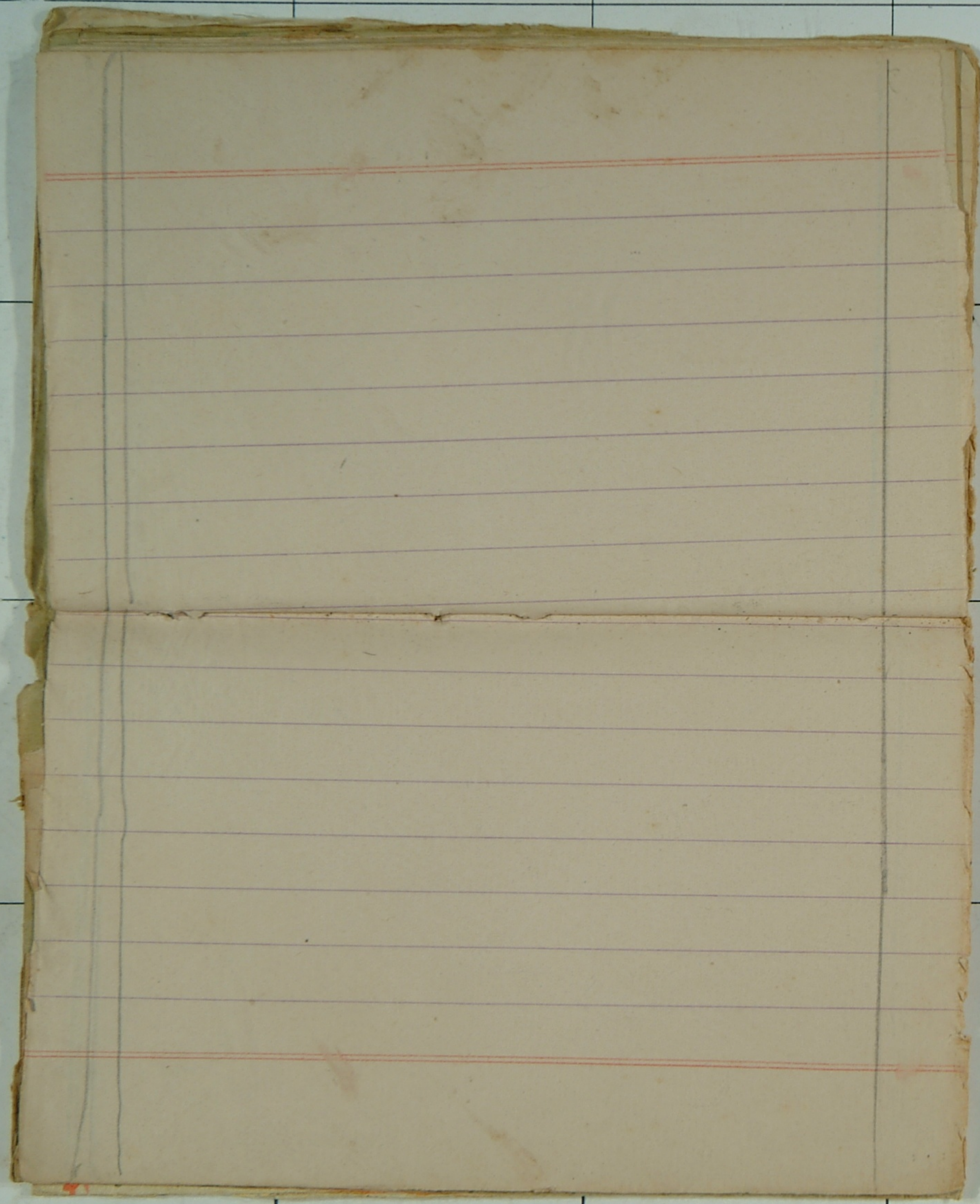
10

15

20

25

30



20

15

10

5

0

cm.

5

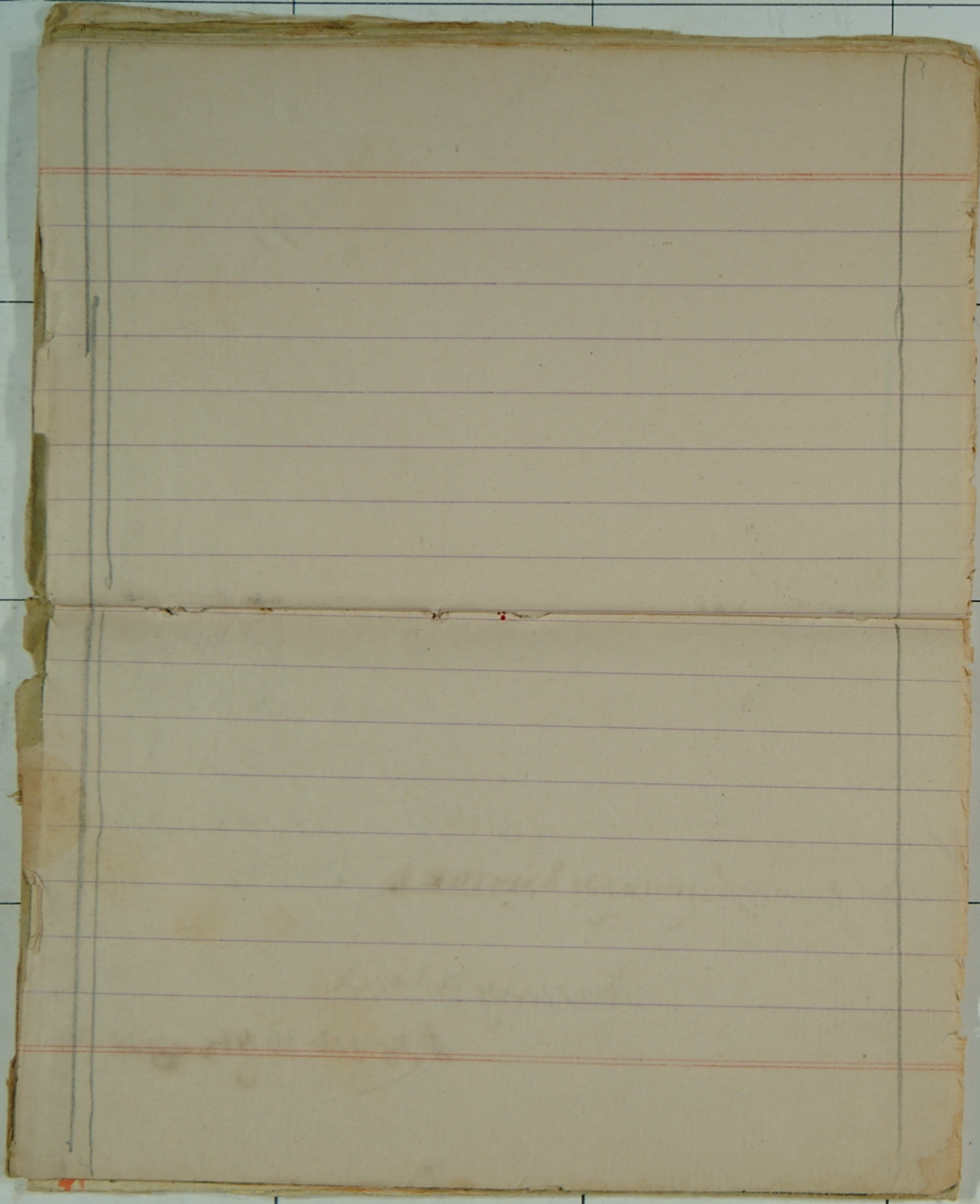
10

15

20

25

30



श्री लालि धर्म कृष्ण श्रेष्ठ

सादर स्मरणम्

उपान्व पत्रपात्रैरु सिन्हापो/मन्त्रार्थ सति
सम्पन्न गरीयसा स कृतार्थ कुम्भे॥

20

15

10

5

0

cmts.

5

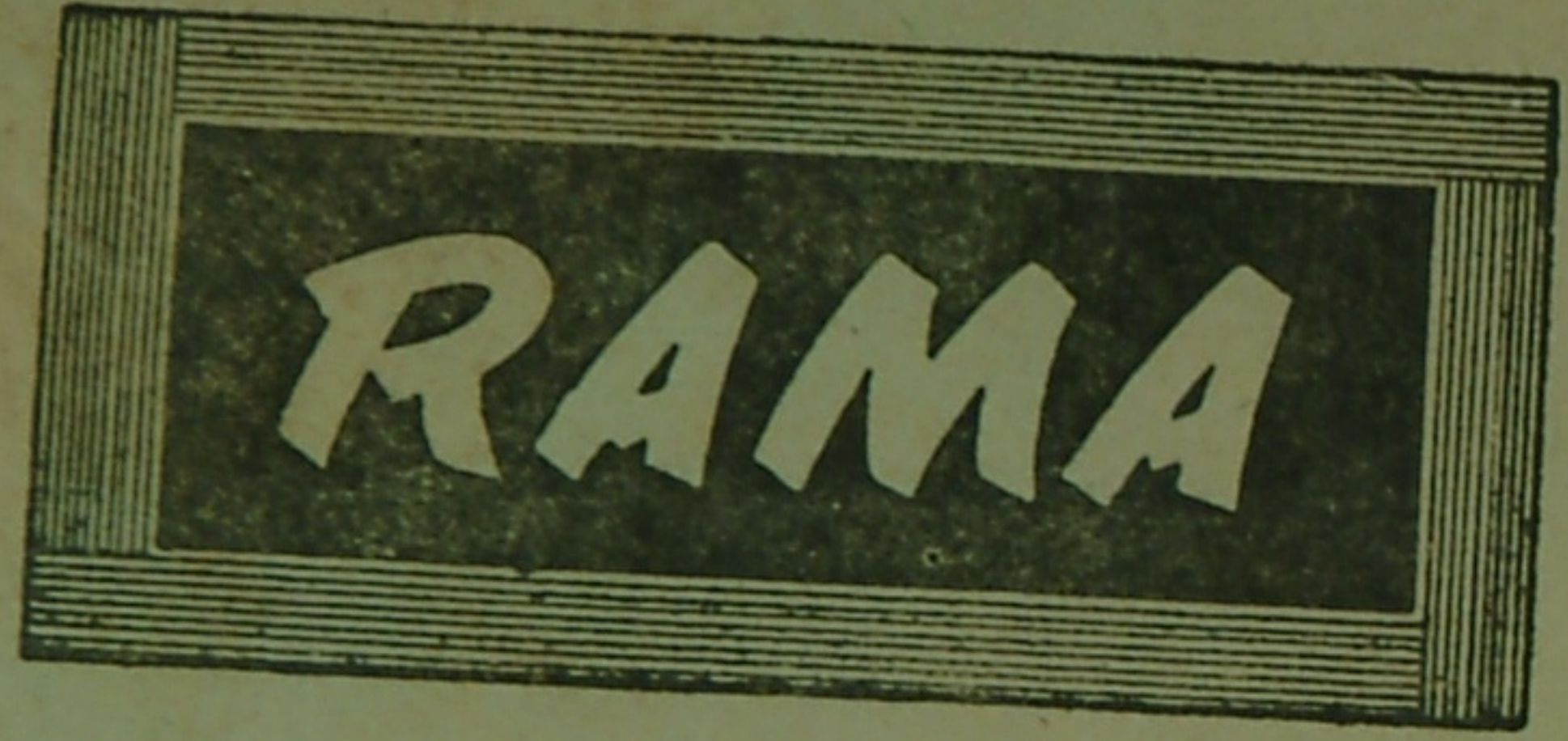
10

15

20

25

30



EXERCISE

TIME-TABLE

5-11-14-2

इतिथन कोमिकल कम्पनी, मऊनाथ भंजन (उ.प्र.)

कटने, चोट लगने और हर प्रकार के घड़े में लाभदायक है

श्रीराम तेल

श्रीराम

कलम, पेंसिल के साथ-साथ 'श्रीराम तेल' की एक छोटी भी आपने पास रखिये!



20

15

10

5

0

cmts.

5

10

15

20

25

30



५१५-११ ।
५१५-११ ।
५१५-११ ।
५१५-११ ।

५३३
५३३
५३३
५३३

20

15

10

5

0

cmts.

5

10

15

20

25

30

